हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।
भावना अपनी का फल हम पा गये।।टेक।।

वीतरागी हो तुम्हीं सर्वज्ञ हो।
सप्त तत्त्वों के तुम्हीं मर्मज्ञ हो।।
मुक्ति का मारग तुम्हीं से पा गये।
हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।।१।।

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में।
किन्तु प्रभुवर लीन है निज ध्यान में।।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये।।
हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।।२।।

तुमने बताया जगत के सब आत्मा।
द्रव्य-दृष्टि से सदा परमात्मा।।
आज निज परमात्मा पद पा गये।।
हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।।३।।